. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हि. ४८४

॥ दमयन्ती ॥

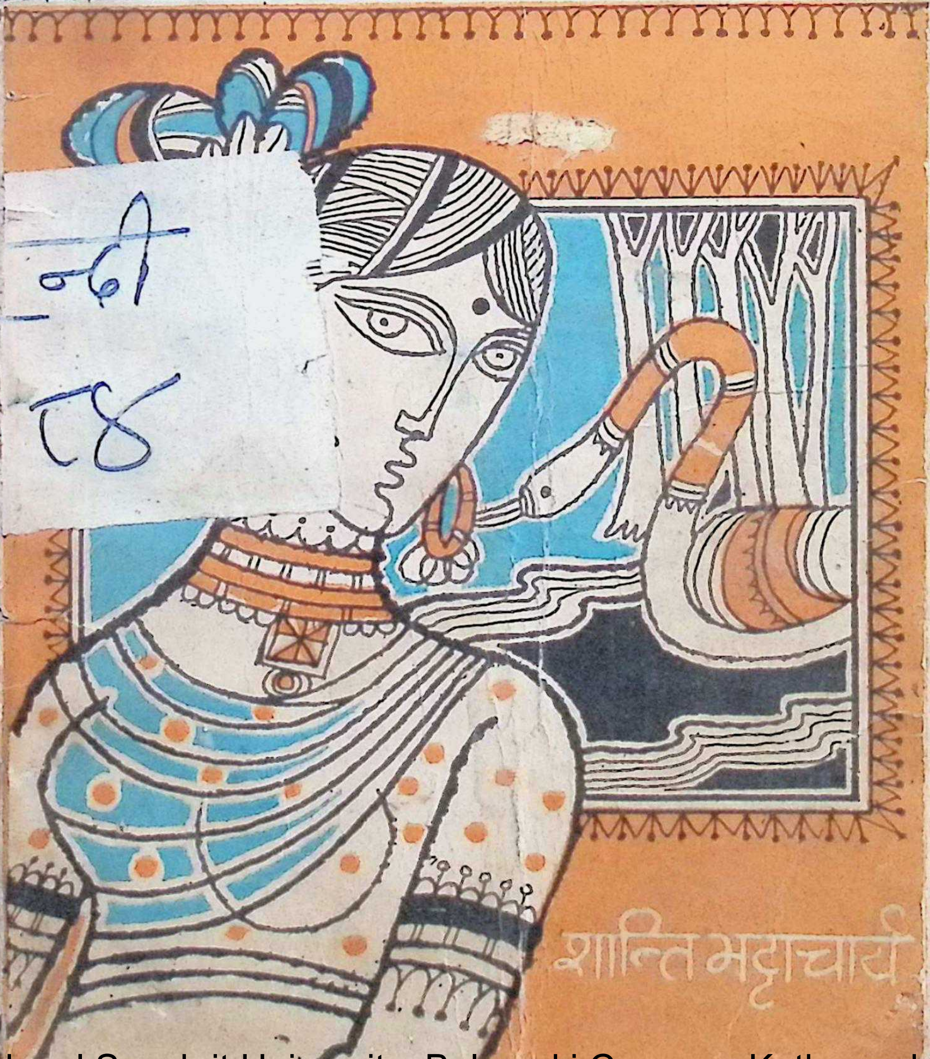

शान्ति भट्टाचार्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

॥ दमयन्ती ॥

शान्ति भट्टाचार्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

१२०४० द.नं.

नेपाल साहित्य केन्द्र
मूल्य नेरु... ६।५०.

मूल्य : पांच रुपये
प्रकाशक : जगदीश भारद्वाज
सामयिक प्रकाशन
३५४३, जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२
संस्करण : १६८१
सर्वाधिकार : सुरक्षित
कला-पक्ष : हरिप्रकाश त्यागी
मुद्रक : नवप्रभात प्रिंटिंग प्रेस,
बलबीर नगर, शाहदरा दिल्ली-११००३२

DAMYANTI : by Shanti Bhattacharya : Rs. 5.00

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रकाशकीय

प्रकाशकीय

भारतीय संस्कृति पर पौराणिक गाथाओं की अमिट छाप है। ये गाथाएं जीवन के विभिन्न अंगों का स्पर्श करती हैं। कुछ आख्यान वस्तुतः बहुत ही मार्मिक हैं और इन्हीं गाथाओं में से 'नल-दमयन्ती' भी एक है। पौराणिक काल में अपने देश में स्त्री जाति को समाज में क्या स्थान प्राप्त था, उसकी विद्वता तेजस्विता तथा स्वाभिमान कैसा था यह दमयन्ती के चरित्र से स्पष्ट हो जाता है। दुर्व्यसनों एवं कुसंगति में पड़ कर प्रबल नैतिक चरित्र वाले व्यक्ति भी किस अधोगति को प्राप्त हो जाते हैं इसका विवरण हमें राजा नल के जीवन से मिलता है।

सरल एवं सुबोध शैली में लिखी यह पुस्तक किशोर, व्यस्क, प्रौढ़ सभी अवस्था के लोगों को रुचिकर प्रतीत होगी, ऐसा हमारा विश्वास है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

एक

भगवान सूर्य विदर्भ देश के गगनचुम्बी प्रासादों, हवेलियों तथा घरों पर अपनी पवित्र किरणें बिखेर चुके थे।

कई लोग अपने-अपने घरों की छतों पर खड़े होकर सूर्य भगवान को अर्घ्य चढ़ा रहे थे। मंदिरों में घंट ध्वनियाँ हो रही थीं।

विदर्भ के राजा भीम के महल के चारों ओर वाटिकाएँ थीं, उसमें शुक-सारिकाएँ और मोर टुहुकने लगे थे।

नगर के बाहर एक सरोवर था।

आम्र, अँगूर और अन्य फलों तथा बेला, चमेली, चम्पा एवं सूर्यमुखी फूलों से सुगंधित वाटिका के बीचो-बीच यह सरोवर था। सरोवर सुन्दर और बहुत बड़ा था। इसमें नगर के बाहर की नदी से एक जलधारा लाकर छोड़ दी गयी थी। इससे सरोवर में सदा पानी भरा रहता था।

दमयंती अपनी सखियों के साथ जलक्रीड़ा करने के लिए आयी थी। जल में इत्र डाल दिया गया था, जिससे वह महक उठा था। दमयंती जल में स्नान करने लगी। केशिनी, सुहासिनी और वन्या नामक सहेलियाँ उससे उपहास कर रही थीं।

केशिनी दमयन्ती के रूप-यौवन की प्रशंसा कर रही थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मीठी चुटकियों से चिढ़कर दमयन्ती ने कहा, "क्यूं री केशिनी, तेरी जवान तो आजकल बड़ी लम्बी हो गयी है ?"

"नहीं स्वामिनी, ऐसी कोई बात नहीं है। सच, कल एक पंडित अपने महाराजा से कह रहा था 'इतनी तेजस्वी, यशस्वी और रूपवती कन्या इस पृथ्वी पर दूसरी नहीं है। आप इसके विवाह की जरा चिन्ता न करें। दूल्हा अपने आप मिल जायेगा।"

"यह कैसे हो सकता है पंडित जी, पुत्री राजा की हो या रंक की, युवा होने पर सबको एक ही चिन्ता हो जाती है। हर बाप सोचने लगता है कि कैसे मैं इसके लिए योग्य वर ढूढूं। कैसे मेरे सिर से यह बोझा हलका हो।"

"आप ठीक फरमा रहे हैं महाराजा। पंडित ने गंभीर स्वर में कहा किन्तु जो कन्या देवताओं और यक्षों के बीच चर्चित हो उसे मनुष्यों में श्रेष्ठ वर क्यों नहीं मिलेगा ?'

"फिर भी आप कोई नाम तो बताइए। पंडित ने अनेक नरेशों के नाम गिना दिये। अंत में पंडित जी राजा नल का नाम लेते समय गर्व से तन गये। महाराज ! इस पृथ्वी पर नल से श्रेष्ठ कोई वर नहीं है। धीरवान, बलवान, रूपवान, गुणवान, विद्वान, वेदों का ज्ञान, गौ-ब्राह्मणों का पालक, राजा नल से राजकुमारी दमयंती का विवाह हो जाए तो सोने में सुहागा हो जाए।'...सखि दमयंती, तुम्हारा क्या विचार है ?"

दमयंती का मुख लज्जा से लाल हो गया। वह झट से डुबकी लगा बैठी।

सारी सखियाँ खिलखिला कर हँस पड़ीं। फिर दमयंती तैर कर एक संगमरमर की चौकी पर बैठ गयी। विचारने लगी। सच, राजा नल महान योद्धा हैं। संसार में श्रेष्ठ और अनुपम हैं। एक बनजारा कह रहा था कि राजा नल जब रथ पर सवार

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

होकर चलते हैं तब उनकी गरिमा देवताओं जैसी हो जाती है।

और दमयंती अपने हृदय में नल के प्रति प्रेम गहरा कर रही थी। वह उनकी स्मृति में खो गयी।

सुहासिनी ने हथेली में पानी भर कर दमयंती पर फेंका, दमयंती चौंक पड़ी। उसने झट से पूछा, "क्या बात है, कहाँ खो गयी थीं ?"

दमयंती ने झट से कहा, "खोती कहां ? यहीं तो बैठी हंसों की क्रीडाएं देख रही हूँ। देखो, हंस आज कैसे नयनाभिराग नृत्य कर रहे हैं ?"

"कौन से हंस ?" वन्या ने मुसकरा कर कहा, "मानसरोवर के हंस या बाहर के सरोवर के हंस ?"

तभी केशिनी ने पानी उछाल कर कहा, "मैं बताऊँ, नयन-सरोवर के हंस ? जैसे प्रसन्न होकर कह रहे हैं हम स्वयं राजा के सपनों में खोये हुए हैं, हम चाहते हैं कि वही तुम्हारे स्वामी बनें।"

दमयंती ने बनावटी गुस्से में कहा, "तुम सबका मस्तिष्क फिर गया है। जिस व्यक्ति को मैंने देखा नहीं उसको वर कैसे मानूंगी।"

"प्रत्यक्ष ही नहीं देखा है, सपने कई बार देख चुकी हैं आप।"

तभी वन्या आश्चर्य भरे स्वर में बोली, "देखो-देखो, उस हंस को देखो ! अपने सभी हंसों से अलग है अनुपम है।"

सबकी दृष्टि उस ओर उठ गयी। देखा एक स्वर्णिम पंखों का हंस कल-कल करता हुआ उस सरोवर में तैर रहा है।

दमयंती के मुंह से हठात् निकला—"अनुपम, ऐसा हंस मैंने कभी नहीं देखा।"

सुहासिनी ने झट से प्रस्ताव रखा, "इसे पकड़ लिया जाय तो आनन्द आ जाय।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"पर पकड़ेगा कौन ?" केशिनी ने कहा। इस पर दमयंती ने कहा।

"जो पकड़ेगा, उसे मैं मोतियों का हार दूंगी।"

फिर क्या था। सारी सखियाँ जल में डुबकी लगा बैठीं।

वन्या बहुत ही चंचल थी। तैरना उसे सीमातीत आता था। उसने एक ऐसा लम्बा गोता लगाया कि हंस को पकड़ लिया।

दमयंती रूपवती होने के साथ-साथ गुणवती भी थी। पक्षियों की भाषा समझती थी।

जब हंस पकड़ कर दमयंती के पास लाया गया तब दमयंती ने पूछा,"अरे तुम कौन से हंस हो यहाँ कैसे आ गये ?"

हंस ने अपने पंख फैला दिये। उसने अपनी चोंच को भिड़ा-भिड़ा कर बोलना शुरू किया।

दमयंती उसकी भाषा समझ गयी। वह प्रफुल्ल होकर बोली, "अरे यह तो राजहंस हैं। बेचारा भटक कर यहाँ आ गया है ?"

राजहंस ने एक पल नृत्य-सा किया। फिर बोला, "मैं नाटक करने नहीं आया हूं। मैं तो संदेश वाहक हूं।"

अब सब सखियां सचेत हो गयीं। उनके कान खड़े हो गये दमयंती भी गंभीर हो गयी। पूछ बैठी, "किसके संदेशवाहक हो ?":

"राजा नल के !"

दमयंती के मुंह से हठात् निकल पड़ा "राजा नल के ? निषध-पति राजा नल के ?"

हंस ने अपना सिर हिलाया।

दमयंती का मुख लाल हो गया। हंस ने मुग्ध स्वर में कहा, "राजकुमारी दमयंती, राजा नल का रूप अश्विनी कुमार के अनुरूप है। मनुष्यों में उसके जोड़ का दूसरा नहीं है। वह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

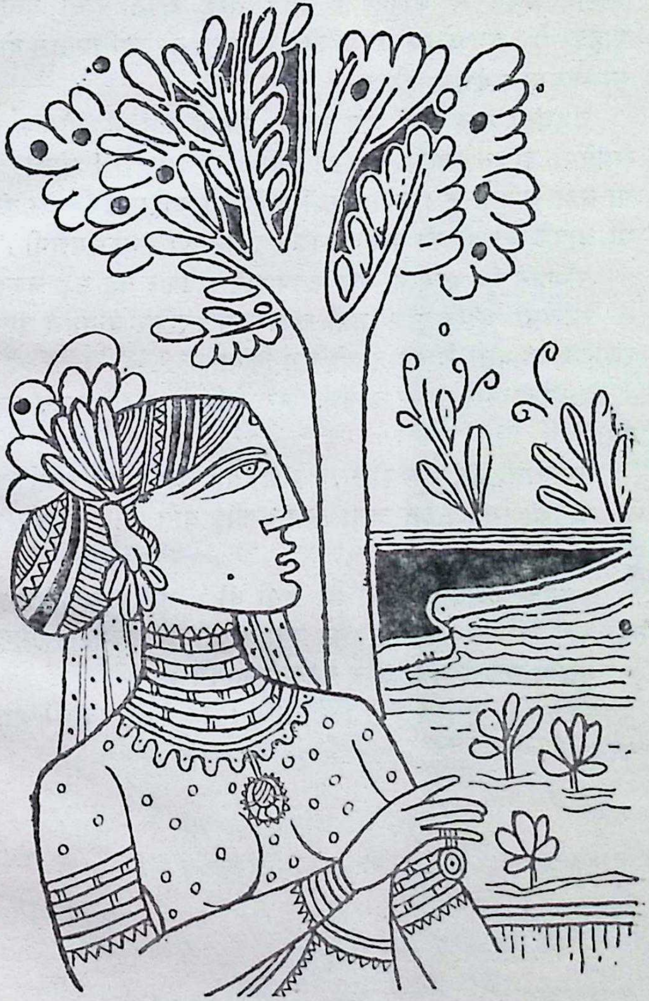

दमयन्ती नल की स्मृति में खोयी हुई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तुम्हारे प्रणय में आकुल है और तुम्हें अपनी पत्नी बनाना चाहता है। तुम दोनों इस पृथ्वी पर उत्तम हो इसलिए तुम दोनों का विवाह सर्वश्रेष्ठ होगा।"

दमयंती सब कुछ भूल गयी। उसके मन में भी नल की स्मृतियाँ नाचने लगीं। वह खो गयी अपने आप में। बोली, "मैं भी यही चाहती हूँ। आप निषधिपति को कहिएगा कि दमयंती भी आपके चरणों की दासी बनकर अपने को धन्य समझेगी।"

राजहंस ने जोर से पंख फड़फड़ाये। फिर वह उड़ चला।

सखियाँ आश्चर्य में डूबी खड़ी रहीं। फिर वन्या ने ताली बजाकर दमयंती के ध्यान को भंग किया।

दमयंती चौंक कर बोली, "अरे, केशिनी वह राजहंस कहाँ गया?"

सुहासिनी हँस कर बोली, "सखि, वह उड़ गया। राजा नल को आपका संदेश देने चला गया। कोई बात नहीं, दोनों ओर एक-सी लगन है।"

सचमुच दमयंती कहीं खो गयी थी। उसे कुछ भी ध्यान नहीं रहा कि उसने राजहंस को क्या कहा। पर लज्जा से उसका मुख गुलाब-सा हो गया और नयन झुक गये।

इसके बाद वे सब हँसी ठिठोली करती हुई प्रासाद की ओर चल पड़ीं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दो

आधी रात हो गयी थी। चन्द्रमा नभ मंडल के बीचो-बीच चमक रहा था। शीतल मनमोहक हवा चल रही थी।

दमयंती अपने महल के वरामदे में बैठी थी। उदास और खोयी-खोयी। उसे लगने लगा था कि एकांत उसके लिए दुखदायी है। लम्बी रात नागिन-सी काटने को दौड़ती है। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

इस तरह उसका मन न किसी मनोरंजन में लगता था और न किसी हंसी खेल में। उसे अपनी सखियों की हंसी ठिठोली नहीं सुहाती थी। वह चाहती थी वही दुखदायी एकांत, जहाँ वह राजा नल के बारे में सोचती रहे। वह रात-रात भर नहीं सोती थी। मनोरंजन उसे अरुचिकर लगने लगा था।

एक दिन विदर्भ नरेश भीम अचानक दमयंती के कक्ष में आ गये।

दमयंती ने झुक कर प्रणाम किया।

राजा भीम का आशीर्वाद के लिए उठा हुआ हाथ उठा ही रह गया।

"क्या बात है बेटी? तुम्हारा चेहरा पीला क्यों है?" तुम इतनी दुर्बल क्यों हो गयी हो? तुम्हारे नयनों में पीड़ा क्यों झलक रही है?"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दमयंती पिता द्वारा एक साथ पूछे गये इतने प्रश्नों को सुन कर लज्जित हो गयी। उसके मुँह से एक ठंडी उच्छवास निकली।

राजा भीम ने तुरन्त अपनी रानी को वुलाया। रानी व्यग्र हो उठी। क्या वात है। वह भाग कर आयी।

"क्या वात है महाराज ?"

महाराज ने कहा, "अपनी वेटी को देखो। कितनी दुर्बल हो गयी है।"

रानी ने दमयंती को देखा तो सन्न रह गयी। उसकी बेटी वहुत ही थक गयी है। इसे क्या हो गया है अचानक ?

उसने राजा से कहा, "महाराज, वह अचानक इतनी दुवली कैसे हो गयी ?"

राजा कुछ देर तक विचारता रहा। फिर वोला, "आज मैंने जाना कि राजा और रानी माँ-वाप नहीं बन सकते।"

रानी के नयन तरल हो गये। वह भी व्यथित स्वर में बोली, "हाँ महाराज, मैं तो कई दिनों से इधर आयी ही नहीं। फिर वह दमयंती के सन्निकट आकर बोली, "वेटी, क्या वात है ? तुम्हें कौन-सा रोग हो गया है ?"

दमयंती ने कहा, 'मैं बिलकुल ठीक हूं माँ, मुझे कोई रोग नहीं है।"

तभी केशिनी ने कुछ कहना चाहा तो दमयंती ने आँखें तरेर कर उसे शांत कर दिया। रानी उस संकेत का अर्थ समझ गयी। उसने महाराज से जाने के लिए प्रार्थना की।

राजा चला गता।

रानी ने दमयंती के सिर पर दुलार का हाथ फेरकर कहा, "बेटी ! माँ से आज तक किसी ने कुछ नहीं छुपाया ? सच-सच वता क्या वात है ?"

दमयंती की आँखों से झर-झरकर आंसू बहने लगे। उससे

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कुछ भी नहीं कहा गया। केवल सुबकियाँ-ही-सुबकियाँ।

तब केशिनी ने सिर झुका कर कहा, "रानी जी आप आज्ञा दें तो मैं कुछ निवेदन करूं।"

दमयंती नहीं चाहती थी कि केशिनी कुछ कहे पर रानी की आज्ञा का पालन करना केशिनी का पहला कर्त्तव्य था।

केशिनी ने कहा, "रानी जी राजकुमारी दमयंती को सबसे बड़ा रोग यह लगा है कि अब यह युवा हो गयी है।"

रानी को सारी बात एक पल में समझ में आ गयी।

उसने पश्चाताप प्रकट करके कहा, "आह! मैं कितनी नादान माँ हूं। अपनी बेटी को अब भी बच्ची समझ रही हूं। तुरन्त ही स्वयंवर का आयोजन कराऊँगी ताकि मेरी बेटी अपनी मन पसन्द का वर चुन सके।"

रानी चलने लगी तब केशिनी बोली, "महारानी जी, राजा नल को अवश्य बुलाइयेगा।"

रानी अब मुस्करा पड़ीं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

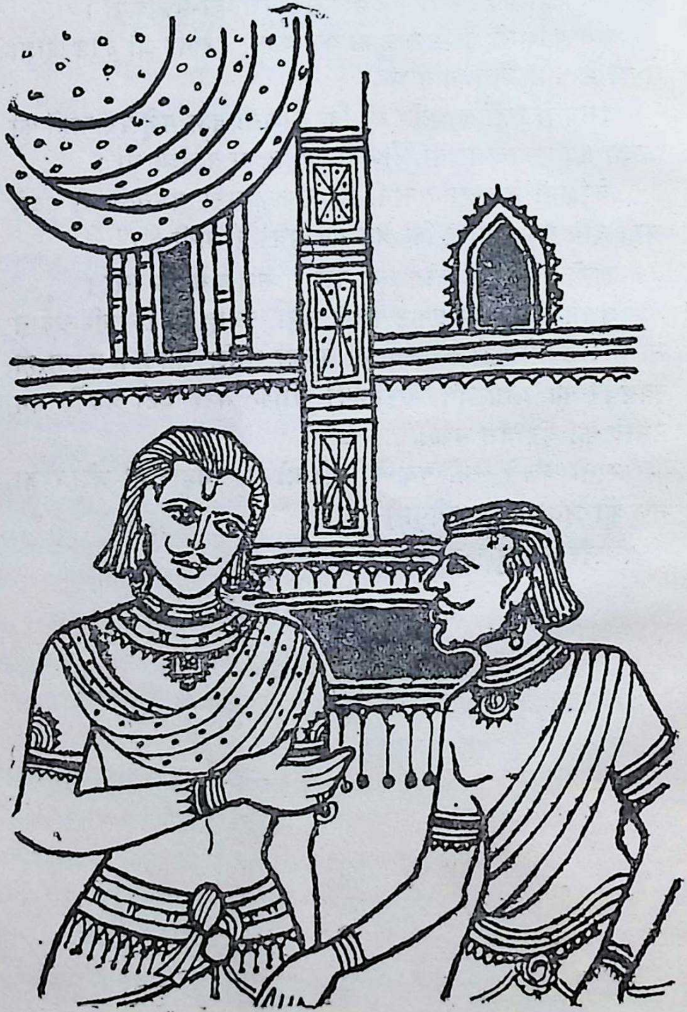

पुष्कर ने कहा, "क्या आज्ञा है महाराज ?"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तीन

स्वयंवर की घोषणा कर दी गयी। विदर्भ देश को खूब अच्छे ढंग से सजाया गया। हर गली, मौहल्ला उत्साह और उमंग से भरा था।

प्रासाद में आगन्तुक राजा और देवताओं को ठहराने की व्यवस्था थी।

राजा नल को भी स्वयंवर का आमन्त्रण मिला। वह प्रसन्नता में डूब गया। दमयंती के प्रति उसमें अपार अनुराग जाग गया था। वह वहां जाने के लिए तैयार हो गया।

राजा नल अपने युग का श्रेष्ठतम सारथी था। उसके पास पवन गति से भागने वाले घोड़े थे, जो देवताओं के घोड़ों को भी पराजित कर देते थे।

उसने अपने भाई पुष्कर को बुलाया। दास ने आकर कहा "राजकुमार पुष्कर एक बाजी खेल रहे हैं। बाजी होने पर तुरन्त आ जायेंगे। प्रतीक्षा करने को कहा है।"

नल को एक आघात-सा लगा कि इधर पुष्कर की रुचि जुए के प्रति दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, उसे रोकना चाहिए।

थोड़ी देर में पुष्कर आ गया। उसने नल को प्रणाम किया। पूछा, "क्या आज्ञा है महाराज? देर के लिए क्षमा चाहता हूं।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

नल ने उसे बैठने के लिए कहा। जब वह बैठ गया तो राजा नल ने कहा, "पुष्कर ! और किसी भी वस्तु का बुरा नहीं होता पर अति हर बात की बुरी होती है। जुए के लिए राजा, महाराजाओं को एक निश्चित समय रखना चाहिए। इस दोपहर में जुए......"

पुष्कर ने बीच में कहा, "महाराज ! सबको अपने-अपने अलग-अलग शौक होते हैं, मुझे भी जुए में सर्वश्रेष्ठ बनना है··· आप स्वयं देखेंगे कि एक दिन इस पृथ्वी पर मुझसे अच्छा कोई खिलाड़ी नहीं होगा।"

"ठीक है, पर राजकाज में यह अधिक नहीं होना चाहिए। राज्य के प्रबन्ध की अपनी अलग जिम्मेदारियाँ होती हैं।"

"राज आपका है। मैं तो केवल आपकी आज्ञा का पालन करता हूँ। हुक्म कीजिए। मुझे अब क्या करना है ?"

नल उसके व्यंग्य को समझ गया। फिर भी उसने अपने धैर्य को नहीं त्यागा। बोला, "मैं विदर्भ देश जा रहा हूँ। वहां की राजकुमारी दमयंती का स्वयंवर है। मुझे भी आमंत्रित किया गया है।" एक पल रुककर वह पुनः बोला, "और तुम तो जानते ही हो कि मैं दमयंती से हार्दिक अनुराग करता हूँ।"

"जानता हूँ महाराज।" पुष्कर ने उत्तर दिया, "आप किसी बात की चिन्ता न करें। मैं निषध में न्याय व्यवस्था बनाये रखूंगा। मैं सदा सुख-शांति के लिए प्रयत्नशील रहूंगा।"

"मुझे तुमसे यही आशा है।"

राजा नल अपने द्रुतगामी घोड़ों के रथ पर आरूढ़ होकर चल पड़े।

घोड़े हवा से बातें कर रहे थे।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

चार

स्वर्गपुरी ।

इन्द्र का प्रासाद । इन्द्र स्वर्ण-रत्न जड़ित शय्या पर बैठे थे । उनके दोनों ओर दो अप्सराएं खड़ी थीं । शची उन्हें सोमरस पिला रही थी ।

विश्व के सुख-दुःख की चर्चा हो रही थी । तभी विश्वयात्री मुनि नारद ने प्रवेश किया । वीणा के तार को झंकृत करके नारद ने कहा, "नारायण-नारायण-नारायण !"

महामुनि का सभी प्राणियों और देवताओं में समान आदर था । इन्द्र और शची ने प्रणाम किया ।

इन्द्र उनके सम्मान में खड़े हो गये । शची ने अपने पति का अनुसरण किया ।

"आज मुनिवर ने आने का कष्ट कैसे किया ? कोई आज्ञा ?"

नारद जी ने मुस्कराकर कहा, "नारायण-नारायण, मैं कोई आज्ञा दूं ! देवेश ! मैं तो सदा देवताओं की प्रतिष्ठा बचाने आता हूं ।"

इन्द्र गम्भीर हो गये । पूछ बैठे, "हमारी प्रतिष्ठा को क्या खतरा है ।"

नारद ने कहा, "प्रतिष्ठा फूल के समान होती है । फूल को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जरा भी प्रतिकूलता मिली कि वह कुम्हलाया। पृथ्वी पर एक महान स्वयंवर हो रहा है। विदर्भ देश के राजा भीम की पुत्री दमयंती का स्वयंवर। देवाधिदेव ! दमयंती देवता और मनुष्य योनि की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी है।"

शची तपाक से बोली, "क्या वह मुझसे भी सुन्दर है।"

"सौ गुना।" नारद जी बोले।

शची जल भुन गयी।

नारद जी को इसकी कोई चिन्ता नहीं। इन्द्र चौंक पड़ा। उसके हृदय में उथल-पुथल हो गई। उसे नारद जी की बात का विश्वास नहीं हुआ। नारद जी ठहरे अन्तर्यामी। सबका मनोभाव समझने वाले। झट से बोले, "इन्द्रदेव को आशंका करना उचित है क्योंकि जिस देवता के चरणों में त्रिलोक का वैभव हो, उसे दमयंती का परिचय क्यों नहीं है ! इसे ही प्रकृति कहते हैं। इन्द्र-देव ! सब मनुष्यों और देवताओं से बड़ी प्रकृति है। वह हम सबको अपनी उंगलियों पर नचाती है।"

एक पल सन्नाटा छाया रहा।

नारद जी ने वीणा पर झंकार करके कहा, "अब मैं सत्य बोल रहा हूं। दमयंती इतनी रूपवती, गुणवती और शीलवती है कि ऐसी नारी त्रिलोक में एक ही है।"

"फिर हम भी स्वयंवर में जायेंगे ?" इन्द्र ने झट से अपना निर्णय सुना दिया।

"नारायण-नारायण, आपका वहां जाना ठीक नहीं है।" नारद जी ने परामर्श देते हुए कहा, "वहां आपका अपमान हो जायेगा।"

"मेरा अपमान ?" इन्द्र गरज पड़ा। वह तन कर खड़ा हो गया, "इस चराचर में ऐसा कौन है जो इन्द्र का अपमान कर दे ?"

नारद जी झट से बोले, "दमयंती। वह आपका अपमान निश्चित रूप से करेगी।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

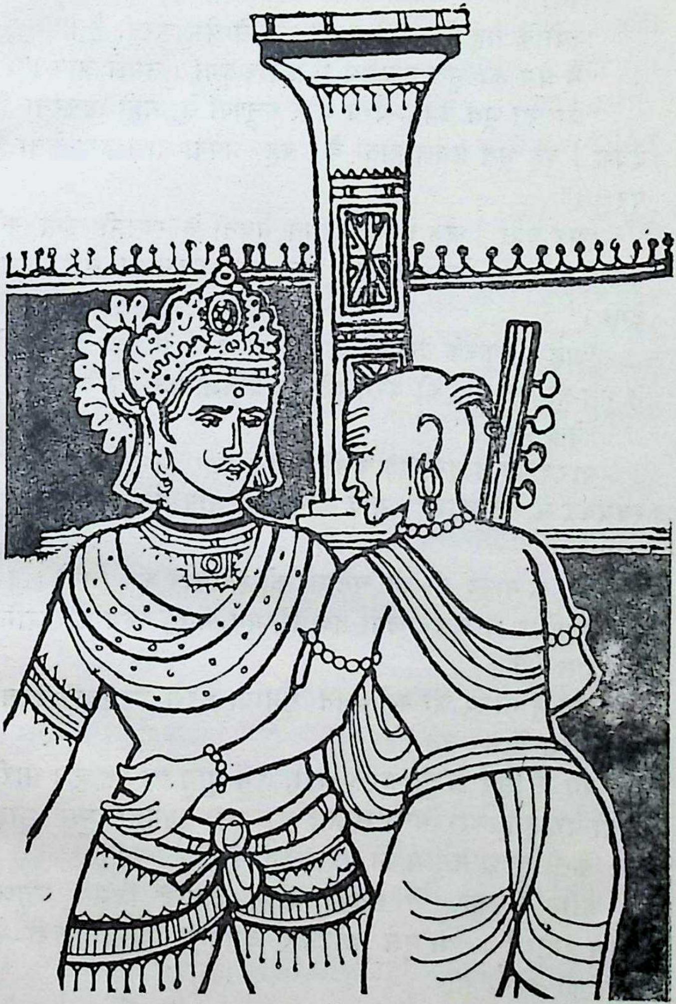

"मेरा अपमान ?" इन्द्र गरज पड़ा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"क्यों ?"

"क्योंकि वह निषध के राजा नल से प्रेम करती है।"

"मैं प्रेम का भूत एक पल में उतार दूंगा। समझे आप।"

"प्रेम का भूत देवता-दैत्य और मनुष्यों से नहीं उतरता है देवेश ! वह भूत प्रबल होता है। वह अपना नाश करा लेता है पर···।"

"पर क्या ? जब दमयंती सात भुवनों के स्वामी इन्द्र को देखेगी तब वह प्रेम-वेम सब भूल कर वरमाला मुझे पहना देगी।"

"यह भी करके देख लीजिए।" नारद जी ने कहा, "दमयंती ने मन-ही-मन नल को वरने की दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली है।"

"देख लूंगा।"

नारद जी ने इन्द्र को चलते-चलते फिर समझाया, "आप स्वयंवर में मत जाइये। यदि जायेंगे तो आप अपना गौरव ही खोयेंगे।"

इन्द्र ने नारद जी की चुनौती को स्वीकार कर लिया। जब इन्द्र स्वयंवर में चलने लगा तब उसे यम, वायु, वरुण और अग्नि भी मिल गये।

इन्द्र ने नारद जी का कथन सुनाया। इस पर चारों देवता भी आवेश में भर उठे।

यम ने सिर ऊंचा करके कहा, "मैं मृत्यु का दूत हूँ। सारी पृथ्वी पर हाहाकार मचा सकता हूं। भला दमयंती मुझे छोड़ कर किसी तुच्छ मनुष्य को वर सकती है ?"

अग्नि ने कहा, "मैं सबको अग्नि देता हूं जिससे मनुष्य पोषण पाता है। क्या मुझे छोड़कर दमयंती किसी पृथ्वी के राजा को वरेगी ?"

इसी तरह सबने अपनी-अपनी प्रशंसा की और बताया कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दमयंती देवताओं को छोड़कर मनुष्य को नहीं वरेगी ।

इन्द्र ने नारद जी की बात याद दिलायी । इस पर देवता खिल-खिला कर हँस पड़े । वरुण ने कहा, "हम मनुष्यों से सभी क्षेत्रों में महान् हैं । रूप, गुण, विद्या और वीरता में श्रेष्ठ हैं । फिर भला दमयंती नल को कैसे अपना पति बना सकती है ?"

इस प्रकार पाँचों लोकपाल स्वयंवर में भाग लेने के लिए चल पड़े ।

वे चारों एक सुन्दर विमान पर थे जो आकाश में उड़ रहा था ।

एक वन में उन चारों ने नल को रथ पर जाते हुए देखा । हालांकि वे देवता थे लेकिन नारद जी की बात से वे मन-ही-मन भयभीत हो गये थे । उनके मन में शंका जम गयी थी कि कहीं दमयंती उनका अपमान न कर दे । यदि देवताओं का अपमान हो गया तो मनुष्य की शक्ति बढ़ जायेगी ।

इन्द्र ने शंका प्रकट की, 'देवगण ! नारद जी भूत, भविष्य और वर्तमान के ज्ञाता हैं ।" उनकी बात सर्वथा निराधार नहीं होती ।

"फिर हमारा अपमान होना क्या संभव है ?"

"हो सकता ।"

"तो फिर हमें कोई उपाय करना चाहिए जिससे दमयंती राजा नल को अपना पति न बना सके ।

इन्द्र ने सुझाया, "मनुष्य जाति बड़ी सरल और भोली होती है । छोटी-छोटी बात पर प्रतिज्ञा करती है और वचन देती है । हमें राजा नल से वचन ले लेना चाहिए ।"

पाँचों लोकपालों ने सोच-समझ कर वन में विमान को उतारा ।

नल को देखते ही पाँचों चौंक पड़े । इतना तेजस्वी मानव ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

यह तो देवताओं से भी महान लग रहा है।

"इसे देखकर दमयंती मोहित हो जायेगी।" यम ने कहा।

इन्द्र ने बताया, "नारद जी कह रहे थे कि दमयंती ने नल को पति बनाने का निश्चय कर लिया है। ऐसी स्थिति में हमें सचेत रहना चाहिए और नल को अपने फंदे में फांस लेना चाहिए।"

देवताओं ने ऐसा ही किया। उन्होंने नल का रास्ता रोक लिया। पाँचों ने अपना अलग-अलग परिचय दिया।

नल पाँचों देवताओं को अपने समक्ष पाकर गद्-गद् हो गया। बोला, "आज मैं कितना भाग्यशाली हो गया हूँ कि मुझे आप जैसे देवताओं के दर्शन हो गये।"

इन्द्र ने कहा, "तुम्हें हमारा एक काम करना है। क्या तुम करोगे?"

"अवश्य ही देवेन्द्र।"

"पहले वचन दो।"

नल ने तुरन्त ही देवताओं को वचन दे दिया। यम ने कहा, "जैसा हम कहेंगे, वैसा ही तुम करोगे?"

"करूंगा।"

इन्द्र जानता था कि मनुष्य अपने वचन का अधिक पक्का होता है। इसलिए उसने राजा नल को वचनों में बांध लिया।

राजा नल ने विनीत स्वर में पूछा, "अब बताइये पंचदेव कि मुझे क्या आज्ञा है?"

"राजन्!" इन्द्र ने कहा, "तुम कहाँ जा रहे हो हमें इसका पता नहीं है। पर सबसे पहले तुम हमारा काम करो। हम देवता हैं। तुम दमयंती को जाकर कहो कि वह हममें से किसी एक को अपना पति बनाए।"

नल के हृदय पर वज्रपात-सा हो गया। वह पाँचों देव-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

ताओं को आँखें फाड़ कर देखने लगा। बड़ी कठिनता से वह बोला, "देवगण, मैं भी दमयंती के स्वयंवर में जा रहा हूँ। मुझे यह कहने के लिए भेजना कहाँ तक उचित है।"

"उचित अनुचित प्रतिज्ञा करने से पहले सोचना चाहिए था।" यम ने क्रोधित स्वर में कहा, "अपने वचनों की रक्षा करो राजा नल।"

"आप जानते हैं कि···।"

"हम इतना ही जानते हैं कि तुम हमसे वचन-बद्ध हो।" अग्नि ने कहा।

राजा नल ने सिर झुका लिया। कहा, "मैं अपने वचनों का पालन करूंगा।"

देवता प्रसन्न हो गये।

राजा नल से विदा होकर इन्द्र ने अपने साथी देवताओं से कहा, "क्यूं देवगण, कैसा चक्कर चलाया ? अब दमयंती इसे कभी भी अपना वर नहीं बनाएगी।"

देवता खिल-खिला कर हँस पड़े, "मूर्ख प्राणी।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पांच

राजा नल उदास-उदास सा विदर्भ पहुँचा। विदभ की गली-गली चौक-चौक एवं सारे राजपथ सजे हुए थे।

राजा नल के आने का समाचार सुनकर विदर्भ में हलचल मच गयी। तुरन्त एक दास ने जाकर केशिनी को समाचार दिया कि राजा नल पधार गये हैं।

केशिनी की बाछें खिल गयीं। वह हवा की गति से तेज भागकर दमयंती के पास पहुँची। दमयंती को बांहों में भर कर उसने कहा, "मुझे हीरों का हार पहनाइए, मैं शुभ संवाद लायी हूँ।"

दमयंती के नयन चमक उठे। अधरों पर हास तैर आया।

"हार देने की कहिए न !" केशिनी ने आग्रह भरे स्वर में कहा, "वर्ना मैं नहीं बताऊँग।"

दमयंती ने उसको बताया, "मैं जानती हूँ कि तुम क्या कहना चाहती हो! यही कि राजा नल आ गये हैं। उनके रथ में जुते हुए घोड़ों की टापों से तो सारा नगर गूंज जाता है।"

केशिनी उदास हो गयी।

दमयंती ने उसे गले का हार देकर कहा, "केशिनी, पुरस्कार तो तुम्हें मिलेगा ही बस अब कृपा करके मुझे…"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

"समझी, पर जरा कठिन काम है।"

"करो।"

केशिनी राजा नल के पास गुप्त रूप से गयी। राजा नल पहले से ही तैयार बैठे थे। उसने व्यग्रता से कहा, "मैं स्वयं दमयंती से मिलने को इच्छुक हूँ। मुझे मेरा कर्त्तव्य पूरा करना है।"

केशिनी उसे गुप्त मार्ग से दमयंती के महल में ले गयी।

दमयंती उसे देख कर रुआँसी हो गयी। उससे कुछ पल बोला नहीं गया। अन्त में राजा ने ही मौन भंग किया, "देवी! मैं आपके सामने राजा नल बन कर नहीं आया हूं बल्कि एक संदेश-वाहक बन कर आया हूं। आज्ञा हो तो कहूं।"

दमयंती की आकृति मलीन हो गयी। वह धीरे से बोली "कहिए।"

"आपके स्वयंवर में इन्द्र, अग्नि,वरुण, यम और वायु आ रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि आप उनमें से एक को अपना पति बनाइये।"

दमयंती यह सुन कर चौंक पड़ी। राजा नल ने आदि से अन्त तक सारी बात बता कर कहा, "देवी! मैं वचनों से विवश हूं।"

"आपने अपना वचन पूरा किया और अब मैं अपने मन की प्रतिज्ञा को पूरी करूँगी। राजन्! मैं मन से आपको पहले ही अपना पति मान चुकी हूँ और अब मैं स्वयंवर में उसे पक्का कर लूँगी। मुझे देवताओं का वैभव नहीं चाहिए। मुझे चाहिए राजा नल का प्रेम।"

वहां से आकर राजा नल ने देवगणों को बताया मैंने अपने वचन का पालन कर लिया है।

"दमयंती ने क्या कहा?"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

 दमयन्ती

"मैं मन से आपको पहले ही पति मान चुकी हूं।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

राजा नल को झूठ बोलना जरा भी पसंद नहीं था। उसने देवगणों से कहा, "देवी दमयंती ने कहा है कि मैं अपने मन की प्रतिज्ञा को पूरी करूँगी। मुझे लगता है कि वह मुझे ही वरमाला पहनायेंगी।"

देवतागण अपमान की आग में जल उठे। उन्होंने निश्चय किया कि वे दमयंती को अपनी पत्नी बना कर ही रहेंगे।

तुरन्त इन्द्र ने अपने साथियों को भेष बदलने के लिए कहा। विज्ञान, शक्ति और कौशल में मनुष्यों से महान देवताओं ने राजा नल का भेष बना लिया। सबने एक दूसरे को देखा। इन्द्र ने कहा, "अब देखना है कि दमयंती किसे अपना पति बनाएगी। किसे वरमाला पहनाएगी।"

स्वयंवर का मण्डप सुन्दर ढंग से सुसज्जित किया गया था। द्वार पर दो हाथी आने वाले मेहमानों को मालाएँ पहना-पहना कर स्वागत कर रहे थे।

वन्दनवार और सुगन्धित फूल चारों ओर बिखरे पड़े थे।

दूर-दूर के राजा और देवता आये हुए थे। राजा नल ने मंडप में प्रवेश किया। वह एक सिंहासन पर बैठा था। उसी पल पाँचों देवता नल का भेष धारण किये हुए राजा नल के पास आकर बैठ गये।

नगाड़ा बजा।

दमयंती ने स्वयंवर मंडप में प्रवेश किया। सारी सभा की आँखें दमयंती के अनुपम सौन्दर्य पर जम गयीं।

दमयंती ने एक पल चारों ओर देखा, फिर वह राजा नल के लिए आगे बढ़ने लगी। उसके हाथ में वरमाला थी।

वह जैसे ही राजा नल के पास पहुंची वैसे ही वह विस्मय में डूब कर पत्थर की-सी हो गयी। उसने मन-ही-मन सोचा 'यह क्या? एक की जगह छः नल···बिलकुल एक जैसे।'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वह समझ गयी कि इसमें कौन-सा रहस्य है। उसने एक पल छहों नलों को देखा फिर कहा, "भेष बदल कर किसी कुँवारी कन्या को वरना महा कपट होता है। मैं देवताओं से प्रार्थना करूँगी कि वे अपने असली रूप में आ जायें।"

देवताओं पर उसकी बात की कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

उसने विनम्र स्वर में कहा, "मैं इस शुभ अवसर पर किसी का अहित करना नहीं चाहती हूं पर मैं देवता और सारी उपस्थिति के सामने घोषणा करती हूं कि मैंने राजा नल को हंस के संदेश के बाद पति मान लिया था। मेरे मन और वचन में राजा नल के अलावा किसी का भी ध्यान आया हो तो प्रकृति मुझे असीम दंड दे ! उसने बार-बार करुण विलाप किया पर देवताओं के हृदय नहीं बदले।

तब दमयंती अपने प्रेम की सम्पूर्ण शक्ति को लेकर बोली, "हे मानवों से श्रेष्ठ और शक्तिवान देवता आप यह न समझें, कि आप सदा मानवों को छलते रहेंगे।···मैं आप लोगों को सत्य की तरह विवस्त्र कर दूंगी। हे प्रकृति ! तू सबसे शक्तिवान और दयालु है। तू एक ऐसी शक्ति है जो देवताओं का गर्व चूर्ण करती है।" फिर वह सारे मण्डप को सम्बोधित करके बोली, "ये देवता जो अपने को सभ्य, सुसंकृत और महान कहते हैं, कितने ओछे और पशुवत हैं कि वे एक अबला को उसकी इच्छा के बिना अपनी बनाना चाहते हैं। मैं कहती हूं कि इनका आचरण दैत्यों के समान है।······मैं इनके वैभव पर लात मारती हूं तथा अपनी आत्मा के सत्य के बल पर इन्हें असली रूप में लाती हूं।"

दमयंती के तेज से देवता कांप गये। कुछ ही पलों में वे अपने असली रूप में आ गये। दमयंती से क्षमा मांगने लगे। इन्द्र ने कहा, "हम पराजित हो गये हैं।" सती दमयंती ने शाँत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

होकर राजा नल को अपना पति बना लिया। वह लज्जा से लाल हो उठी। नल ने भी अत्यन्त ही प्रेम से दमयंती को देखा। देवता प्रसन्न हो गये। राजा भीम ने आशीर्वाद दिया।

इसके बाद इन्द्र ने वरदान दिया, "मैं तुम्हें यज्ञ में प्रत्यक्ष दर्शन दूंगा।"

अग्नि ने कहा, "जहाँ तुम चाहोगे, मैं वहां उपस्थित हो जाऊंगा।"

यम ने कहा, "तुम पृथ्वी पर सबसे स्वादिष्ट खाना पका सकोगे।"

वरुण ने आशीष दिया, "तुम जहाँ चाहोगे जल आ जायेगा।"

सूर्य ने कहा, "मैं तुम्हारी सदा विपत्ति में रक्षा करूंगा।"

सारे देवता अपने-अपने विमानों पर बैठ कर चले गये।

राजा भीम बहुत ही प्रसन्न था। उसने राजा नल और दमयंती को आशीर्वाद दिया और महल में ले जाकर विधिवत् विवाह सम्पन्न कर दिया। अपनी पुत्री को राजा भीम ने हजारों गायें, सोना-चाँदी और हीरे-मोती दिये।

राजा नल अपने देश निषध का लौट आया। दमयंती अपने साथ अपनी तीनों प्रिय सखियाँ लाना नहीं भूली।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

छः

देवताओं के विमान आकाश-मार्ग से जा रहे थे। जिधर से ये विमान जाते थे, उधर एक अद्‌भुत छटा विखर जाती थी। लगता था मनुष्यों से अलग कोई जा रहा है।

रास्ते में कलि और द्वापर मिले। ये भी देवता थे। उन्होंने पाँचों महान देवताओं को देखा तो उत्कंठित हो गये।

प्रार्थना करने पर इन्द्र, यम, अग्नि, वरुण और सूर्य अपने-अपने विमानों से उतरे।

कलि ने नत मस्तक होकर पूछा, "बात क्या है देवाधिदेव ? किधर से आना हो रहा है ?"

इन्द्र ने कहा, "कलि ! हम दमयंती के स्वयंवर से आ रहे हैं ?"

द्वापर ने झट कहा, "आप बड़े उदास लग रहे हैं ? क्या कोई विशेष बात हुई है ?"

यम ने ने दुःखी मन से कहा, "हाँ द्वापर, हम पाँच लोकपालों का ऐसा अपमान पहले कभी नहीं हुआ था !"

कलि ने पूछा, "लेकिन हुआ क्या ? आप मौन क्यों है ?"

इसी पल अपने विमान पर बैठे महामुनि नारदजी आ गये। वीणा को झंकृत करके वे बोले, "नारायण-नारायण-नारायण…"

"नमस्कार देवर्षि !" कलि ने प्रणाम किया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

"आयुष्मान भव।" नारद जी ने कहा, "आप देवताओं के घावों को क्यों हरा कर रहे हैं! आगे ही ये बड़े दुखी हैं।"

"देवताओं को दुःखी करने वाला इस पृथ्वी पर उत्पन्न नहीं हुआ।"

"घमण्ड किसी का भी नहीं रहता है कलि, घमंडी का सिर सदा नीचा होता है। जो जीव नम्र होते हैं, वे अपना नाश कभी नहीं कराते।......मैंने तो इन्हें पहले ही कह दिया था कि आप स्वयंवर में न जायें। राजकुमारी दमयंती सिवाय राजा नल के किसी को अपना पति नहीं बनाएगी। पर ये नहीं माने।"

"तो दमयंती......।"

नारद जी मुस्कराये। बोले, "दमयंती ने जो सोचा वह किया, पर आपके ये महान और सभ्य देवताओं ने अत्यन्त ही भ्रष्ट तरीके अपनाए। उन्होंने तो दमयंती को पाने के लिए राजा नल का रूप भी धारण कर लिया। दमयंती इससे भी नहीं घबरायी। उसने इनके मुखौटे उतार दिए। ऐसा अपमान? सारे मनुष्यों के बीच देवताओं की वह कितनी दमनीय स्थिति थी। वे सब अपराधियों की भाँति खडे थे और सारे मनुष्य मन-ही-मन मुस्करा रहे थे।"

कलि ने गुस्से में कहा, "एक राजा इतना ढीठ? देवताओं से टक्कर! मैं उसे देख लूंगा। देवताओं के अपमान का बदला लूंगा।"

नारद जी उसे रोकते हुए बोले, "शांत, शांत, कलि श्रीमान शांत! इतना आवेश में मत आइए, जिस जीव की रक्षा कोई नहीं करता है उसकी रक्षा एक सबसे बड़ी शक्ति करती है। आप व्यर्थ ही क्यों कष्ट कर रहे हैं। जिस तरह ये अपमानित हुए हैं, उसी तरह आपको अपना-सा मुँह लेकर आना पड़ेगा, समझे।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"मैं आपको बता दूंगा। राजा नल को रास्ते का भिखारी नहीं बनाया तो मेरा नाम कलि नहीं।" उसने द्वापर से पूछा, "क्यों द्वापर, तुम मेरा सहयोग करोगे?"

"अवश्य मित्र! मैं आपको सहयोग अवश्य दूँगा। हमें देवताओं के अपमान का बदला लेना चाहिए।"

नारद जी ने उन्हें फिर समझाया पर कलि और द्वापर नहीं माने।

वे दोनों राजा नल से बदला लेने के लिये तैयार हो गये। तब इन्द्र ने कहा, "भाई कलि, गलती हमारी थी इसका हमें दंड मिल गया, पर तुम व्यर्थ में क्यों उलझ रहे हो। भूल जाओ सब बातों को।"

"नहीं, हम बदला लेंगे।"

नारद जी मुस्कराये। कलि और द्वापर निषध की ओर चल पड़े।

नारद ने इन्द्र की ओर देखा।

इन्द्र ने कहा, "उस धर्मपरायणी स्त्री के सम्मुख इन्हें पराजित होना पड़ेगा। उसकी आत्मा में सत्य और विश्वास की महान शक्ति है। वह अपने आचरण से देवी हो गयी है। अपराजित बन गयी है।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

सात

कलि और द्वापर दोनों ने निषध में प्रवेश किया। कलि को लगा कि वे किसी देवताओं की नगरी में आ गये हैं। इतना सुख, संतोष और समृद्धि कहाँ देखने को मिलती हैं? सब वर्ण के लोग अपने-अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हैं। शेर और बकरी एक घाट पानी पीते हैं। न्याय इतना सस्ता है कि किसी को दुखी नहीं होना पड़ता। प्रभात शंखों की पवित्र ध्वनियों से आरंभ होता है और सांझ मन्दिर की आरतियों से।

राजा नल और दमयंती का घरेलु जीवन अत्यन्त आनंदमय था। राजा नल तो क्या, स्वयं दमयंती राज-काज की बातों में हिस्सा लेती थी। दोनों जीवन का सुख ले रहे थे।

कलि और द्वापर ने एक अतिथि गृह में शरण ली। वहाँ सारी वस्तुएँ राज्य की ओर से मिलती थीं।

लेकिन पुष्कर राजा नल से असन्तुष्ट था। पुष्कर का स्वभाव जरा उदंड था। वह अपने यौवन के बल पर कभी-कभी न्याय का गला घोंट देता था। इस पर नल ने उसे हटा दिया था।

इसकी सूचना कलि और द्वापर को मिल गयी। कलि ने द्वापर को पुष्कर के पास भेजा, पुष्कर ने द्वापर से भेंट की।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

द्वापर ने झट कहा, "आर्यपुत्र पुष्कर, मैं पांसा खेलने में अत्यन्त चतुर और श्रेष्ठ हूं। क्या आप मुझसे पांसा खेलेंगे ?"

"मैं आज तक किसी से पांसा खेलने में हारा नहीं हूं।" पुष्कर ने गर्व से कहा—

"फिर हो जाये बाजी।"

दोनों खेलने लगे। द्वापर ने चौपड़ के खेल में पुष्कर को हरा दिया। पुष्कर उदास हो गया।

द्वापर ने कहा, "उदास क्यों हो रहे हैं आर्यपुत्र ? मैं आपको जुए में इतना सिद्धहस्त बना दूंगा कि भविष्य में कोई भी आपको नहीं हरा सकेगा।"

दोनों मित्र बन गये।

इधर कलि राजा नल को प्रभावित करने के लिए प्रयत्न कर रहा था। एक दिन उसे अवसर मिल गया। एक दिन राजा नल को क्या सूझा कि वह सुरा का पान करके महल से निकल पड़ा।

वह अपने रथ पर था। उसके घोड़े हवा से भी तेज भागने वाले थे और वह सारथी भी सर्वोत्तम था।

अचानक सामने एक चट्टान आ गयी। उस चट्टान से जैसे ही रथ भिड़ता कि इसके पहले ही कलि ने घोड़ों को रोक दिया। वह घोड़ों की लगाम पकड़ कर लटक गया। राजा नल के प्राण बच गये।

राजा नल उसे अपने प्रासाद में ले आया। कहावत है काले के पास गोरा बैठे, रंग भले ही न बदले पर बुद्धि अवश्य बदल जाती है। वही स्थिति राजा नल और पुष्कर की हो गयी थी। समय बीतता गया।

पुष्कर अपने संसार में लीन रहता था। और राजा नल दमयंती से दूर-दूर हो रहा था। जिस दमयंती से वह

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

एक पल भी अलग नहीं रहता था, उससे वह दो-दो दिन और रातें नहीं मिलता था। दिन-रात क्रीड़ाओं में मग्न रहता था और सुरापान करता था।

एक रात दमयंती ने राजा नल को बुलाया। केशिनी स्वयं गयी थी। उसने जाकर देखा कि राजा नल केलि भवन में नृत्य देख रहे हैं।

कलि उनके पास बैठा-बैठा उनका मनोरंजन कर रहा है।

केशिनी ने नृत्य के बीच बाधा डाल कर कहा, "महाराज, महारानी ने आपको अभी बुलाया है।"

"क्यों ?" राजा नल की आंखें लाल हो गयीं। केशिनी कांप उठी। सहमती हुई वह बोली, "राजकुमार इन्द्रसेन और राजकुमारी इन्द्रसेना का स्वास्थ अचानक खराब हो गया है, महारानी घबरा उठी हैं ?"

कलि मुंह बिगाड़ कर बोला, "बस इस साधारण बात के लिए तुमने महाराजा के अपार आनन्द में बाधा डाल दी। क्या निषध में राजवैद्य मर गये हैं ?"

राजा नल ने भी कठोर स्वर में कहा, "इस बार तो क्षमा कर देता हूं। इन साधारण बातों के लिए हमारे आनंद में विघ्न डाला तो हम तुम्हें जीवित जला डालेंगे।"

केशिनी हाथों में मुंह छुपा कर लौट आयी। वह दमयंती की गोद में पड़ कर फफक-फफक रोने लगी।

दमयंती ने स्नेह से हाथ फेर कर कहा, "क्या बात है केशिन, तुम इस तरह क्यों रो रही हो ?…बोलो न ?"

केशिनी ने सारी व्यथा-कथा सुनायी। दमयंती का हृदय क्रोध से भर गया। वह उसी पल राजा नल के पास गयी। कड़क कर बोली, "रोक दीजिए यह नृत्य संगीत।"

कक्ष में सन्नाटा छा गया। राजा नल का नशा उतर गया।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

केशिनी ने सारी व्यथा-कथा सुनाई।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

कलि दुष्टता से मुसकराने लगा।

दमयंती ने रूँधे हुए स्वर में कहा, "कोई राजा रात-दिन चौपड़ नहां खेलता है, नृत्य नहीं देखता है। जो ऐसा करता है वह विपत्ति से टकराता है। महाराजा दमयंती का ऐसा अपमान आपने कैसे किया ?"

दुष्ट कलि धीमे स्वर में बोला, "क्योंकि यह आपके पति हैं। पति को अपनी इच्छा के अनुसार सब कुछ करने का अधिकार है।"

राजा नल ने कलि की बात को दोहराया, "दमयंती ! अपनी सीमा से बाहर मत जाओ। मैं राजा नल हूं। सैकड़ों गुणों का स्वामी।"

दमयंती को लगा कि किसी ने उसकी पीठ पर अनेक कोड़े मार दिये हैं।

राजा नल ने फिर कहा, "तुम यहां से जा सकती हो। भविष्य में हमें बिना पूछे इधर मत आना समझीं।"

अपमान में जल कर दमयंती लौट आयी। केशिनी की भाँति वह भी रोने लगी।

जब रोकर हृदय हलका कर लिया तब दमयंती ने कहा, "कोई जोर का झंझावात आने वाला है। मुझे लगता है कि मेरे भाग्य का तारा डूब गया है।"

केशिनी ने भी शंका प्रकट की, "रानी जी, मुझे भी कुछ ऐसा ही लगता है कि निकट भविष्य में अशुभ घटेगा।"

दोनों रात भर सोचती रहीं।

अंत में दमयंती ने निर्णय लिया, "केशिनी मैं अपने दोनों बच्चों को ननिहाल भेजना चाहती हूं। यहाँ उन्हें कभी-भी संकट का सामना करना पड़ सकता है।"

"फिर ?" केशिनी ने पूछा। उसकी आँखों में भय नाच

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उठा।

"तुम बृहत्सेना को बुला कर लाओ।" बृहत्सेना नौकरानी थी। वह तुरन्त आयी। उसने जैसे ही प्रणाम किया वैसे ही दमयंती ने कहा, "बृहत्सेना! जल्दी से वार्ष्णेय नामक सूत को बुला लाओ।"

उसके जाते ही केशिनी ने पूछा, "उसे क्यों बुलाया है?"

"मैं अपने दोनों बच्चों को विदर्भ भेजना चाहती हूं, यहां उनकी सुरक्षा का भय है।"

बृहत्सेना वार्ष्णेय को बुला लायी। वार्ष्णेय को दमयंती ने अपने पुत्र इन्द्रसेन तथा पुत्री इन्द्रसेना को ले जाने के लिए कहा।

सारथी वार्ष्णेय नें दमयंती की आज्ञा का पालन किया।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

आठ

कलि चेष्टा करने लगा कि अब मैं कौन-सा दाव चलाऊं जिससे राजा नल पुष्कर से जुआ खेलने के लिए तैयार हो जाय ?

आखिर उसे अवसर मिल गया।

एक दिन की बात है—

कलि और राजा नल आपस में बैठे-बैठे पांसा खेल रहे थे। नल कलि को बार-बार पराजित कर रहा था। नल को घमण्ड का नशा चढ़ गया था।

वह बोला, "मित्र कलि, मुझे लगता है, मैं इस पृथ्वी का सबसे अच्छा द्यूतक (जुआरी) हो गया हूं।"

"निःसन्देह महाराज।" कलि ने कहा, "लेकिन एक बात है महाराज ?"

"क्या ?"

"आप पृथ्वी के सबसे श्रेष्ठ सारथी हैं और आपके भाई के पास पृथ्वी का श्रेष्ठ सफेद बैल है। उसका नाम 'दाँत' है। मैं समझता हूँ कि यदि वह बैल मिल जाय तो आप देवताओं की गरिमा को भी मिटा सकते हैं।"

"मिल जाय ?" चौंक पड़ा राजा नल। बोला, "भाई कलि, वह मुझे मिला हुआ ही समझो। पुष्कर मेरा छोटा भाई है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वह मुझे कभी किसी वस्तु के लिए मना नहीं करेगा।"

कलि हंस पड़ा।

"अरे, तुम हंसे क्यों ? क्या तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं होता ?"

"नहीं महाराज।" कलि ने स्पष्ट शब्दों में कहा, "वह समय चला गया है जब पुष्कर आपकी आज्ञा को ईश्वर की आज्ञा समझता था। अब तो···।"

नल ने तुरन्त किसी दास को पुकारा। कहा, "जाओ, राजकुमार पुष्कर को अभी बुला कर लाओ।"

दास तुरन्त गया।

कुछ ही पलों में वह लौटकर आ गया। उसके साथ पुष्कर था, द्वापर था।

पुष्कर ने प्रणाम करके कहा, "क्या महाराज चौपड़ खेल रहे हैं। मुझे लगता है कि महाराज अब पांसा फेंकने में सर्वश्रेष्ठ हो गये हैं।"

कलि ने दुष्टता की, "मैं तो चाहूंगा कि एक बार महाराज सारे विश्व को चुनौती देकर नाम उत्पन्न कर दें।"

द्वापर झट से बोला, "पर हमारे राजकुमार पुष्कर भी किसी से कम नहीं हैं।···मैं समझता हूं कि महाराज नल को पुष्कर जी पराजित कर देंगे।

"यह असंभव है।" कलि ने कहा।

"आपको भ्रम है।" द्वापर ने उकसाया, तभी पुष्कर ने कलि और द्वापर को शांत करके कहा, "महाराज, आपने मुझे अभी क्यों बुलाया है ?

"पुष्कर मुझे तुम्हारा दाँत नामक सफेद बैल चाहिए।"

द्वापर ने बीच में ही कहा, "आ गया न अवसर ? कलि देव, कर लीजिए परीक्षा कि कौन श्रेष्ठ द्यूतक है।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"क्या मतलब ?"

"पहला दाव दांत बैल का ही लगा दीजिए।" द्वापर ने गर्व से कहा, "मैं समझता हूं पहले ही दाव में महाराजा नल का गर्व पुष्कर जी चूर्ण कर देंगे।"

कलि ने उठकर कहा, "बहुत ही घमण्ड हो गया है। मैं जानता हूं कि इधर पुष्कर जी अपने आपको बहुत अधिक समझने लगे हैं।"

बात तूल पाती गयी।

थोड़ी ही देर में नल और पुष्कर के बीच जुआ होना निश्चित हो गया।

इसकी सूचना दमयंती को मिली। दमयंती तुरन्त समझ गयी कि उसके दिन बदल गये हैं। बुरे दिनों की काली छाया उसके भाग्य पर पड़ गयी है।

वह लपक कर केशिनी के पास आयी। केशिनी को भेज कर उसने नल को बुलाया और प्रार्थना की, "आप इतना अनुचित कार्य क्यों कर रहे हैं स्वामी ?"

"अनुचित ?" नल ने लापरवाही से कहा, "अरे पगली, यह तो हम दोनों भाईयों के बीच क्षणिक मनोरंजन हो रहा है।"

"नहीं महाराज, "मुझे इधर रह-रह कर बुरे स्वप्न आ रहे हैं। आप ऐसा मत कीजिए। आप राजा हैं और राजा का स्वभाव बदलते जरा भी देर नहीं लगती।"

पर राजा नल ने दमयंती की बात को नहीं माना। अधिक विरोध करने लगी तो नल ने उसे डांट दिया। "स्त्री होकर अधिक ज्ञान की बातें न करो। मैं स्वयं अपना भला-बुरा समझता हूं।"

दमयंती अपनी सहेलियों केशिनी, सुहासिनी और वन्या

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

से आकर बोली, "मेरा भाग्य का सूर्य निस्तेज हो गया है। अब मेरी रक्षा तो भगवान ही करेगा।"

केशिनी ने दमयंती को समझाया, "नहीं रानी जी आप सती नारी हैं आपको कोई भी दुख नहीं दे सकता।"

"सती नारी सदा पति के द्वारा ही दुख पाती है। जिस सती नारी का पति सती के वचनों को नहीं सुनता, वह स्वयं कुपथ पर जाता है और दूसरों को भी दुख देता है।"

सुहासिनी ने झट से कहा, "नहीं रानी जी आप ऐसा क्यों सोचती हैं ? महाराज स्वयं समझदार हैं। दो घड़ी जी बहला लेंगे।"

तीनों दमयंती को भांति-भांति से ढांढस बंधाती रहीं पर दमयंती के मन में काले वादल मंडराते रहे।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

नौ

राजा नल जुए क़ा बड़ा ही प्रेमी था। उसने उसके लिए एक अलग से द्यूत क्रीड़ा कक्ष (जुआघर) बना रखा था। उसमें दोनों के खेलने का प्रबन्ध होने लगा।

द्वापर ने पहले से ही ऐसे पांसें बना रखे थे जिससे नल कभी जीत ही नहीं सकता था। उन पांसों का प्रयोग पुष्कर ने खुल कर किया। पहली बाजी में ही राजा नल हार गया। इस पर कलि ने राजा को उकसाया।

दाव-पर-दाव रखे जाने लगे। हीरा, मोती, मानक पन्ना, खजाना, राज्य और सब कुछ।

पुष्कर घमण्ड से खिल-खिला कर हंसा और बोला, "महाराज, आप अब क्या दाव पर लगायेंगे ? आपके पास···।"

राजा नल उदास होकर बोला, "अब मेरं पास कुछ भी नहीं है।"

द्वापर ने झट से कहा, "एक दाव और लगाइए। इस बार आप हार गये तो आपको निषध छोड़ना पड़ेगा।"

कलि ने कहा, "क्या पता इस बार हारा सब कुछ वापस मिल जाय।"

दाव लग गया।

दमयंती हताश हो गयी।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

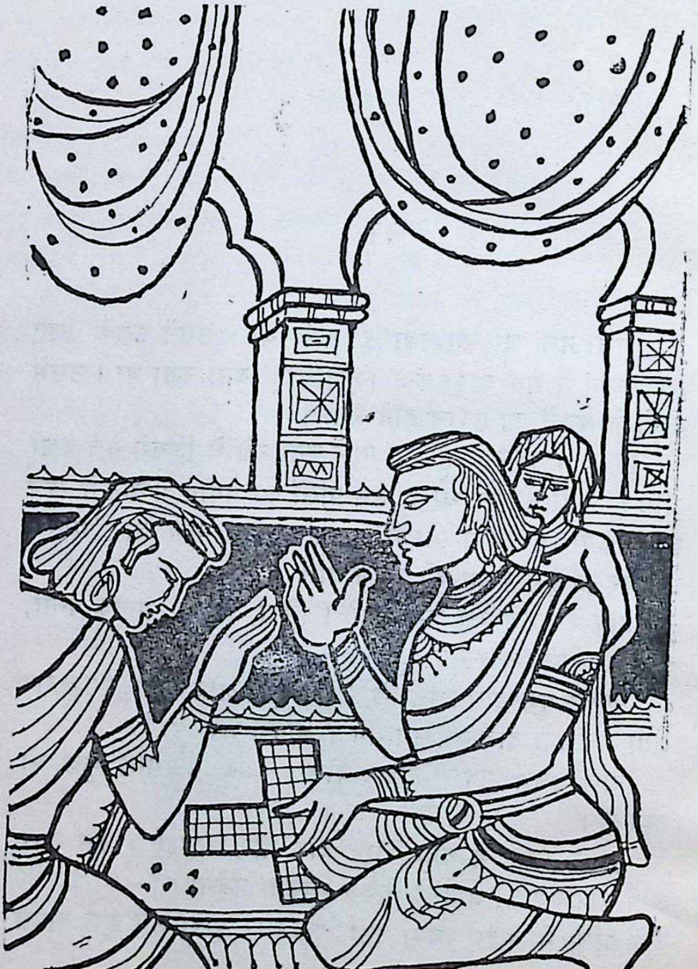

पुष्कर से नल जुए में हारता गया।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

भष्टाचारियों ने राजा नल को फिर हरा दिया। राजा नल का मुख मंडल पीला पड़ गया। रोगी-सा दमयंती के पास गया।

दमयंती उसे देखते ही समझ गयी कि क्या परिणाम निकला है।

राजा नल अपराधी की भांति दमयंती के सामने खड़ा हो गया। उसकी दृष्टि झुकी हुई थी। वह कुछ बोलना चाहता था पर दमयंती ने मना कर दिया, "नहीं महाराज, आप कुछ भी मत कहिए, मैं सब कुछ समझ गयी हूं। आपकी आंखों की तरलता, उतरा हुआ पीला मुख, कांपते हुए अंग-अंग मुझे कह रहे हैं कि आप सब कुछ हार गये हैं।"

नल की आंखों से आंसू बह निकले।

दमयंती ने फिर कहा, "आप हताश मत होइए महाराज, जीवन में सुख-दुख आते ही रहते हैं। इनसे घबराना नहीं चाहिए।"

"दमयंती!" राजा नल ने बड़ी कठिनता से कहा, "मैं सब कुछ हार गया हूं। यहां तक कि यहाँ रहना भी। हमें यह नगर तुरन्त ही छोड़ना पड़ेगा।"

दमयंती ने विनम्र स्वर में कहा, "महाराज, यदि आपको कोई अड़चन न हो तो हम विदर्भ चलें। हमें वहाँ किसी वस्तु का अभाव नहीं रहेगा।"

"नहीं दमयंती, जो विना बुलाये अपने प्रिय-से-प्रिय जन के पास भी जाता है तो अपमानित होता है। मान-सम्मान बराबर वालों को दिया जाता है?"

"फिर?"

"मैं चाहता हूं कि तुम अकेली विदर्भ चली जाओ। तुम्हें तुम्हारे मां-बाप दुख में गले से लगा लेंगे।"

"नहीं स्वामी, जो स्त्री अपने पति को संकट में छोड़ कर

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सुख में रहती है, उसे सदैव नरक मिलता है। मैंने आपके साथ अपार सुख भोगा है, इसलिए मैं आपके साथ विकट संकट भी भोगूंगी।"

"नहीं रानी, तू सदा फूलों में पली है। पुष्पों की सेज पर सोयी है।"

"आपने भी तो कम सुख नहीं भोगा है। भाग्य की ही तो बात है। जब वे दिन नहीं रहे तो भला ये दिन भी कैसे रहेंगे। अंधेरे के बाद उजाला आता ही है !"

दोनों अपने-अपने तन पर एक-एक कपड़ा रख कर चल पड़े।

तीनों सहेलियों ने साथ में चलने का दृढ़ निश्चय किया पर दमयंती ने उन्हें समझा दिया। कहा, "मैं तो पति के सुख-दुख में भागीदार हूं। आप सब मेरे दुख में व्यर्थ ही क्यों भागीदार बन रही हैं। भगवान तुमको सुखी रखें। अच्छा तो यह रहेगा कि तुम तीनों विदर्भ चली जाओ।"

राजा नल और दमयंती महल से निकल पड़े। पुष्कर के हृदय पर पत्थर-सा पड़ गया। उसे लगा कि वह अपने भाई को निकाल कर अच्छा नहीं कर रहा है।

तभी कलि और द्वापर अट्टहास कर उठे। कलि ने दमयंती के पास आकर कहा, "क्यूं दमयंती, पा लिया देवताओं को छोड़ कर मनुष्य से विवाह करने का फल ?"

द्वापर ने कहा, "अब तुम्हें बड़ी-बड़ी यातनाएं मिलेंगी।"

"मैं सब सह लूंगी पर अपने स्वामी नल को कभी नहीं छोड़ूंगी।"

वे चल पड़े। नगर के नर-नारी रो रहे थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दस

नल और दमयंती चलते रहे। चलते-चलते वे एक घोर जंगल में पहुंचे। रास्ते-भर नल दमयंती को लौट जाने के लिए कहता रहा और दमयंती उसे धैर्य देती रही, "राजन! पत्नी पति का आधा अंग होती है। विपत्ति और अभाव में वह सुख देने वाली होती है। आप मुझसे अलग होने का विचार छोड़ दीजिए।"

इस तरह फल-फूल खाते हुए वे बन वासियों की भांति भटक रहे थे।

एक सुन्दर तालाब पर उन्होंने डेरा जमाया, ठंडा पानी पिया। बैठे-बैठे इधर-उधर की बातें करते रहे।

अचानक दो सुन्दर हंस तालाब पर दिखाई दिये। उनके पंख सोने के थे। राजा नल लालच में आ गया। उसने वस्त्र खोल कर उस पर डाला।

हंस उसका वस्त्र लेकर उड़ गया। दमयंती पीड़ा से तिल-मिला उठी।

दमयंती ने लम्बा सांस लेकर कहा, "हम लोगों का बड़ा दुर्भाग्य है।"

"सच, बुरे दिन परछाई की भांति हमारे पीछे पड़ गये हैं।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दमयंती ने अपना आधा वस्त्र नल को पहना दिया। नल ने दुखी होकर कहा, "रानी यह रास्ता नृक्षवान पर्वत पार करके विदर्भ की ओर जाता है। मैं तुम्हें फिर कहता हूं कि तुम जाओ। इस घोर जंगल में किसी सुन्दर स्त्री का निःसहाय पुरुष के साथ रहना ठीक नहीं है।"

दमयंती ने आंसुओं से गद्‌गद् कंठ से कहा, "राजन ! मुझे बार-बार ऐसा मत कहिए। इस तरह मैं तो पीड़ा से व्याकुल होकर मर जाऊंगी। महाराज ! मैं आपकी पत्नी हूं। मुझे अपना कर्त्तव्य पूरा करने दीजिए। मैं जीऊंगी आपके साथ और मरूंगी आपके साथ।"

दमयंती के दृढ़ निश्चय को सुन कर नल को धैर्य मिला। उसने कहा, "दमयंती, सही अर्थ में तुम सती साध्वी पत्नी हो।"

दमयंती इससे आश्वस्त हो गयी।

दोनों धूप में घूमते-घामते एक झोपड़ी में पहुंचे। झोपड़ी खाली थी। दोनों थक गये थे इसलिए झोपड़ी में घुस कर सो गये।

दमयंती को तुरन्त नींद आ गयी पर राजा नल नहीं सो सका। उसे बार-बार दमयंती की चिंता हो रही था। वह दमयंती को ध्यानपूर्वक देखने लगा। मुरझाये हुए फूल की भांति वह मुरझा गयी थी। घने केशों में धूल के कण चमक रहे थे। गोरा रंग काला-सा लगने लगा था। थकान से सारा तन श्याम हो गया था। फूल से भी कोमल पांव में जगह-जगह रक्त रिस रहा था। राजा नल की आंख भर आयी। सोचने लगा यह बेचारी मेरे कारण सारे दुख उठा रही है। आह ! मैं कैसा पति हूं ? मेरे जैसे विवेकहीन पुरुष को मर जाना चाहिए।...नहीं, मरने से तो मैं दमयंती से फिर कभी भी नहीं मिल सकूंगा। यदि इसे वन में छोड़ जाऊं तो यह अपने पीहर

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पहुंच जायेगी। फिर तो कभी सुख के दिन आ सकते हैं।

इस आशा से उसे कुछ ढांढस बंधा। वह उठा। झोपड़ी में एक पुरानी तलवार पड़ी थी। उसे उठा कर लाया। वस्त्र को आधा-आधा चीरा। फिर चुपचाप चल पड़ा। फिर लौट कर आया। दमयंती को देख कर करुण विलाप करने लगा। अपने आप से कहने लगा—लेकिन इस वन में तो जंगली पशु, सांप और अजगर हैं। कहीं दमयंती को खा गये तो ?…

उसने तुरन्त अपने मन को समझाया, "इस दमयंती को कोई नहीं खा सकता है। यह पतिव्रता है, गुणवती है, भाग्य-शालिनी है। प्रभु इसकी रक्षा करेंगे।"

नल रोता-रोता चला गया।

हवा का जोर का अंधड़ चला।

दमयंती की आंखें खुल गयीं। उसे लगा हवा सांय-सांय करके उसे जगा रही है। उसने हठात् उठकर देखा। राजा नल उसके पास नहीं था। उसने व्याकुल होकर पुकारा, "महाराज, महाराज…।" वह अपना कटा वस्त्र देखकर चौंक पड़ी। तीर की भांति बाहर निकली। करुण-क्रन्दन कर उठी "महाराज… महाराज…महाराज…।"

उसकी पुकार जंगल में प्रतिध्वनि बनकर गूंज गयी। चारों ओर 'महाराज' की पुकार मच गयी।

दमयंती की व्याकुलता बढ़ती गयी। थोड़ी देर में वह चारों ओर नल को खोजती हुई एक घोर वन की पगडंडी पर चलने लगी।

दमयंती रोते-रोते थक गयी थी। उसके नयन लाल हो गये थे।

इसी समय एक व्याध उसे दिखायी पड़ा। वह अपने अंगों को हाथों से छुपाने लगी। व्याध अकेली दमयंती को देख

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कर दुष्ट बन गया। उसकी वासना जाग गयी। उसने निश्चय किया कि इतनी सुन्दर स्त्री को वह अपनी क्यों नहीं बना लेता। यह सोच कर व्याध दमयंती पर झपटा।

दमयंती ने साहस को नहीं छोड़ा। उसने बिजली की तरह कड़क कर कहा, "नीच पापी तुमने मुझे छुआ तो मैं तुझे भस्म कर दूंगी। मैं दमयंती हूं, जिसने अपने पति के सिवाय किसी के बारे में सोचा भी नहीं है।"

व्याध पर दमयंती की बात का कोई असर नहीं पड़ा। वह तो वासना में अंधा हो गया था। दमयंती की ओर बढ़ने लगा।

दमयंती ने रास्ते में टूटी हुई लकड़ी को उठा लिया। उसने तड़ातड़ व्याध को पीटना शुरू किया।

व्याध पीछे हट गया। दमयंती को लगा कि वह पापी उसकी शील लूटने के लिए कोई नयी बात सोच रहा है। दमयंती ने भी इस बीच अपने को तैयार कर लिया। उसने कड़क कर कहा, "नीच आगे मत बढ़ना वर्ना मैं तुम्हारे प्राण ले लूंगी।"

दमयंती उसके प्राण लेती, इसके पहले ही एक सांप ने व्याध को काट लिया। व्याध तड़प-तड़प कर मर गया।

दमयंती ने एक पल सुख की साँस ली। नाग देवता को प्रणाम करके बार-बार धन्यवाद दिया। इसके बाद वह पीड़ा से तड़फ-तड़फ कर रो उठी।

उसका रोना सारे जंगल में गूंज गया।

कुछ देर रोने से दमयंती का हृदय हलका हो गया। उसने अपने आंसुओं को पोंछा। एक झरने के समीप जाकर उसने अपना मुंह धोया। पेड़ की छाया तले बैठ कर विश्राम करने लगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दमयंती की दृष्टि सूने आकाश की ओर गयी। आकाश नीला था। उसमें एक भी बादल नहीं था। उस अनन्त आकाश में एक अकेला पक्षी उड़ रहा था, शान्त और नीरव।

उसे देख कर दमयंती के मन में साहस का संचार हुआ। उसने सोचा कि एक अकेला पक्षी इतने बड़े आकाश में उड़ रहा है फिर मुझे किस बात का भय है? यह पृथ्वी तो अनेक प्राणियों से भरी हुई है।

दमयंती चल पड़ी। उसने दृढ़ निश्चय कर लिया कि वह इस पृथ्वी पर राजा नल को ढूंढ़ कर ही दम लेगी।

कई दिन के बाद उसे कुछ व्यापारी मिले। ये व्यापारी बड़े ही भले और सचरित्रवान थे। उन्होंने वन में भटकती दमयंती को देखा तो उनके हृदय में दया उत्पन्न हो गयी।

एक ने पूछा, "बेटी! इस घोर वन में तुम अकेली क्यों भटक रही हो?"

दमयंती जरा भी नहीं घबरायी। बोली, "भाई, इस घोर वन में अकेला वही भटक सकता है, जिसका भाग्य रूठ गया हो।"

"आओ, हमारे साथ चलो। इस वन में किसी बिरले का ही भाग्य बदलता है।"

दमयंती लाचार थी ही, उन व्यापारियों के साथ चल पड़ी।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ग्यारह

नल दमयंती से अलग तो हो गया पर उसके मन की चिन्ता मिटी नहीं। वह बहुत दूर चलने के बाद पुनः लौट आया। दमयंती को न पाकर वह विकल हो गया।

इधर-उधर ढूंढ़ने लगा। अन्त में हार कर चल पड़ा। सोचा जो भाग्य में लिखा है, वही होगा। राजपाट, मान-सम्मान और गौरव खोने के बाद मैं अपनी पत्नी को त्याग दूं तो कोई बड़ी बात नहीं। यह सब मेरे भाग्य की ही बात है।

यह सोच कर वह मन की हरी-भरी घाटियों में चलता रहा। चलते-चलते वह एक तालाब के समीप पहुँचा, वहां घना झुरमुट था। उस झुरमुट में से अचानक आवाज आयी, "राजन! मुझे बचाओ, राजा नल मेरी रक्षा करो, मैं जल रहा हूं।"

राजा नल उस पुकार की ओर भागा। उसको ज्ञात हुआ कि अग्नि में कोई प्राणी जल रहा है? नल को अग्नि का वर-दान था। इसलिए वह अग्नि की स्तुति करके आग में घुस गया। उसमें से एक नाग जाति के कार्कोटक को पकड़ लाया। कार्कोटक ने उसे बहुत ही धन्यवाद दिया।

उसने राजा नल को कुछ कदम चलने को कहा। राजा नल अभी दस कदम ही चला था कि कार्कोटक ने उसे काट लिया।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कर्कोटक ने नल को काट खाया ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

राजा नल का रूप कुरूप हो गया। उसका रंग काला हो गया।

राजा नल ने घृणा से कहा, "दुष्ट नाग, ऐसी कृतघ्नता मैंने पृथ्व पर नहीं देखी। जिस व्यक्ति ने तुम्हारे प्राणों की रक्षा की, उसको यह पुरस्कार दिया ?"

कार्कोटक हंस कर बोला, "राजा नल मैंने इस स्थिति में यह बहुत ही उत्तम किया है। इससे तुम अपनी असलियत छुपा कर रख सकोगे। यहाँ से तुम राजा ऋतुपर्ण के पास जाओ। अपना नाम बाहुक सूत रखो। नगर में तुमको बड़ी प्रतिष्ठा मिलेगी। जब तुम्हें पुनः असली रूप में आना हो तो इन वस्त्रों को पहन लेना। क्यों राजा, अब तो तुम मुझसे नाराज नहीं हो ?"

"नहीं कार्कोटक मैं तुमसे बहुत ही प्रसन्न हूं।" नल ने कहा।

राजा नल अयोध्या की ओर चल पड़ा। वहां उसने राजा के सामने अपने गुणों की प्रशंसा की।

राजा ने इतने गुण वाले व्यक्ति को अपने पास रख लिया।

राजा नल का मन दमयंती के लिए बेचैन रहता था। वह चाहता था कि उसे इस बात का पता लग जाय कि दमयंती जीवित है और सुख से है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बारह

दमयंती ने चेदिनगर की महारानी को अपनी सारी व्यथा-कथा कही। इधर राजा भीम को भी इस बात का पता चला कि राजा नल जुए में अपना सब कुछ हार कर कहीं चला गया है।

राजा भीम ने तुरन्त ही चारों ओर विभिन्न दूत नल-दमयंती को खोजने के लिए भेज दिये।

सुदेव नामक ब्राह्मण ने दमयंती का पता लगा लिया और वह उसे लेकर विदर्भ लौट आया। राजा भीम बहुत ही प्रसन्न हुआ और उसने सुदेव को एक हजार गायों का पुरस्कार दिया।

रानी ने दमयंती के पीले मुख को देखा। दमयंती ने एकान्त में अपनी मां से कहा, "मां, मैं बिना अपने पति के जीवित नहीं रह सकती। आप शूर-वीर राजा नल की खोज कीजिए।"

रानी दमयंती के दुख से दुखी हो गयी। वह अपनी बेटी को सांत्वना देने लगी।

राजा भीम ने दमयंती को समझाया कि मेरे दूत शीघ्र ही नल को खोज कर ले आयेंगे। तुम जरा भी चिंता मत करो।

राजा विदर्भ ने नल को ढूंढ़ने का एक नया ही तरीका निकाला। उसने अपने दूतों से कहा कि वे नगरों में जा-जा

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कर कहें कि एक राजा अपनी सुन्दर, सुशील और धर्मपरायण पत्नी को जंगल में अकेला छोड़ आया। वह इतना बड़ा विश्वास-घाती था कि उसने उस बिचारी का आधा वस्त्र भी ले लिया। उस धूर्त्त के लिए रानी अब भी रात-दिन रोती रहती है। जिस किसी को वह मिल जाय उसे दुतकारें।

इस बात ने बहुत ही प्रभाव डाला।

एक दूत का नाम पर्णाद था। वह अयोध्या में पहुंचा। उसने ऋतुपर्ण के पास जाकर यह बात कही।

एकांत में बाहुक नामक सारथी आया। दुख भरे स्वर में बोला, "भाई, किसी पर इतना बड़ा आरोप मत लगाओ। सभी तो भाग्य के सताये हुए होते है। संकट में पड़ कर उस अभागे राजा नल से भी गलती हो गयी होगी। तुम विश्वास करो वह दुखियारा रात-दिन अपनी पत्नी के वियोग में जल रहा है। कितनी मर्मान्तक वेदना वह पा रहा होगा, इसका अनुमान तो वही लगा सकता है जिसकी पत्नी उससे बिछड़ गयी हो।"

पर्णाद और कठोर स्वर में बोला "भाग्य के भरोसे पड़ कर पत्नी से छल करना कितना घातक है? अरे! पुरुष हो इतनी कायरता दिखायेगा, तब नारी की रक्षा कौन करेगा?"

"तुम कुछ भी कहो विप्रवर, पर मैं इतना ही कहूंगा कि शायद राजा नल दया का पात्र है।"

पर्णाद समझ गया कि यह बाहुक अवश्य ही राजा नल को जानता है।

वह उसी समय विदर्भ लौट आया। राजा भीम को सारा वृत्तांत कह कर वह दमयंती के पास आया। दमयंती ने झट से कहा, "वे ही मेरे पति देवता राजा नल हैं। ऐसा मेरा रोम-रोम कह रहा है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"लेकिन वे तो बड़े कुरूप हैं।"

"कुछ भी हो, मेरा मन कभी भी झूठी साक्षी नहीं देता।"

पर्णाद को फिर भी विश्वास नहीं हुआ। दमयंती ने तुरन्त ही एक चाल चली। उसने राजा भीम को बताया "आप एक बार मेरे स्वयंवर की घोषणा करें। इसके लिए आप केवल राजा ऋतुपर्ण को ही कहलाएं, समय बहुत ही कम रखें। राजा नल के सिवाय इतने कम समय में कोई भी रथ विदर्भ नहीं आ सकता। इससे हमें एक सत्य का और पता लग जायेगा कि बाहुक नाम का सारथी राजा नल हो है।"

तुरन्त ही राजा ऋतुपर्ण को दमयंती के स्वयंवर की सूचना दी गयी। दमयंती को एक बात का भय भी लगा कि कहीं यह समाचार सुनते ही राजा नल आत्महत्या न कर ले?··· इस आशंका से वह व्याकुल हो उठी।

राजा ऋतुपर्ण ने तुरन्त बाहुक को बुलाया कहा, "बाहुक! हमें दमयंती के स्वयंवर में आज ही जाना है। तुम रथ तैयार करो।"

"दमयंती का स्वयंवर?" बाहुक चौंक पड़ा। पीड़ा से कराहता हुआ बोला, "नहीं महाराज, नहीं, दमयंती का स्वयं-वर कैसे हो सकता है। वह तो राजा नल की पत्नी है। विवाहित है।"

"हमें इससे क्या लेना-देना?"

राजा नल का हृदय टूट गया।

उसे जरा भी आशा नहीं थी कि उसकी इतनी रूपवती, गुणवती और धर्मपरायण पत्नी एक पल में इतनी बदल जायेगी। उसे लगा कि नारी विश्वास करने वाली नहीं होती।

ऋतुपर्ण ने सोच में डूबे नल को कहा, "बाहुक! तुम किस चिंता में पड़ गये? अपना रथ तैयार करो।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बाहुक ने तुरन्त ही रथ तैयार किया। उसने जैसे ही विदर्भ में प्रवेश किया वैसे ही बाहुक बना नल उदास हो गया।

दमयंती के हृदय में आशा की लहरें मचलने लगीं। उसने तुरन्त ही केशिनी को भेजा। केशिनी ने जाकर देखा तो उसके हृदय पर बड़ा आघात लगा। यह तो अत्यन्त ही काला और कुरूप व्यक्ति है। इसकी तो बांहें तक छोटी हैं।

दमयंती को केशिनी ने सब कुछ बता दिया। दमयंती का मुख और पीला पड़ गया। फिर भी उसने धैर्य नहीं छोड़ा।

उसने केशिनी को कहा, "मुझे विश्वास नहीं होता। केशिनी इस पृथ्वी पर इतना तेज रथ हांकने वाला कोई नहीं है। मैं स्वयं उनकी परीक्षा करूंगी। मैं सती स्त्री हूं। मुझसे मेरा पति कहां छुप कर जायेगा ? चलो महाराज के पास।"

दमयंती महाराज के पास पहुंची। उनसे बाहुक से मिलने की आज्ञा चाही। दमयंती के इस सुझाव को राजा ने अस्वीकार-सा कर दिया। कहा, "बेटी लोक व्यवहार में ये बातें अच्छी नहीं लगती हैं। कहीं यह राजा नल नहीं हुआ तो यह बाहुक तुम्हारे बारे में क्या सोचेगा ?"

दमयंती को राजा भीम की बात ठीक लगी। पर उसने परोक्ष रूप से परीक्षा करने की ठानी।

उसने केशिनी के साथ अपने दोनों बच्चों को भेजा। उन बच्चों को देखते ही राजा नल का हृदय स्नेह से भर आया। उसने उन दोनों बच्चों को गोद में उठा लिया। प्यार से चूमने लगा। केशिनी ने पूछा, "क्या बात है बाहुक, तुम इन बच्चों को देख कर गद्‌गद् क्यों हो गये ? तुम्हारी आंखें क्यों भर आयीं ?"

राजा नल ने रुँधे स्वर में कहा, "मेरे भी ऐसे ही दो बच्चे हैं।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"क्या वे…?"

"नहीं-नहीं केशिनी, वे मरे नहीं हैं। वे एकदम तन्दुरुस्त और अच्छे हैं।

केशिनी ने हठात् पूछा, "तुम मेरा नाम कैसे जान गये?"

राजा नल भी कम चतुर नहीं था। वह बोला, "तुम रानी दमयंती की विशेष दासी हो, तुम्हें भला यहां कौन नहीं जानता।"

केशिनी ने झट-पट आकर दमयंती को सारी बातें बतायीं। दमयंती ने उत्साह से कहा हो न हो, यह मेरा नल ही है। अवश्य ही यह शापित हो गया है। किसी माया ने इसके सौन्दर्य को हर लिया है। वह एक पल रुक कर बोली, "जाओ, तुम महाराज ऋतुपर्ण को कहो कि आज दमयंती आपके बाहुक के हाथ का भोजन खाना चाहती है।

केशिनी ने तुरन्त ऋतुपर्ण से कहा। ऋतुपर्ण ने बाहुक को आज्ञा दे दी।

बाहुक ने भोजन बनाने से मना कर दिया। ऋतुपर्ण ने क्रोध से कहा, "बाहुक! हम तुम्हारे स्वामी हैं, हमारी आज्ञा की अवहेलना का दंड तुम जानते ही हो? हम तुम्हें शूली पर चढ़वा सकते हैं।"

राजा नल ने झुंझला कर कहा, "महाराज! आप समझते क्यों नहीं मेरी भी अपनी कुछ विशेषताएं हो सकती हैं!"

"नहीं बाहुक, तुम्हें हमारा अपमान नहीं करना चाहिए।"

अब बाहुक विवश था। वह संघर्ष में झूलता रहा। उसने सोच लिया कि यदि उसने खाना बना दिया तो पकड़ा जायेगा। यदि नहीं बनाया तो महाराज ऋतुपर्ण का अपमान होगा।

राजा नल बड़ी देर तक एकांत में सोचता रहा। अंत में उसने निर्णय किया कि उसे अब अपने आपको प्रकट कर देना

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

चाहिए। अब रहस्य अधिक रहस्य नहीं रह सकता।

राजा नल के मन में कुछ शंकाएं और थीं। उन्हें दूर करना चाहता था। वह दमयंती के पास गया। प्रार्थना की, "रानी जी, आप मुझसे खाना बनवाना क्यों चाहती हैं? आपके पास तो श्रेष्ठ पाकशास्त्री हैं।"

दमयंती ने झट से कहा, "मैं आज अस्वादिष्ट भोजन करना चाहती हूं।"

"फिर बनाऊंगा।" नल ने अपना निर्णय सुनाया, "लेकिन इसके पहले मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूं।"

"पूछिए।"

"कोई पत्नी अपने श्रेष्ठ पति और बच्चों को छोड़कर दूसरा विवाह क्यों करती है?"

"इसलिए कि उसका पति निर्दयी कसाई की भांति सत्य-परायण, रूपवती, उसके बच्चों की मां जैसी सुयोग्य पत्नी को वन में अकेली छोड़कर चला जाता है,।...बाहुक! जो पति अपनी पत्नी की रक्षा नहीं कर सकता, उसे पति कहलाने का क्या अधिकार है? ऐसे कायर और विश्वासघाती पति के संग पत्नी क्यों रहें? बोलो बाहुक!"

नल ने लम्बा सांस लेकर कहा, "जब मनुष्य के बुरे दिन आते हैं तब उसकी बुद्धि भी उसकी शत्रु हो जाती है।...वह बेचारा अपनी रानी के सामने शायद अब इसलिए नहीं आता होगा क्योंकि वह अपने को अपराधी समझता है। उसे इतना कठोर दंड तो आपको नहीं देना चाहिए। सच, मैं आपको कहता हूं कि जिस दिन आपके पति को यह मालूम होगा कि आपने विवाह कर लिया है, वह अपने प्राण त्याग देगा।"

दमयंती नल की पीड़ा को समझ गयी। वह तेज स्वर में बोली, "त्याग दे, उसकी मुझे कोई चिंता नहीं। मैं उस पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

थूकती हूं।"

नल चीख पड़ा, "दमयंती !"

और दमयंती ने तुरन्त हाथ पकड़ कर कहा, "महाराज, अब अपने आपको मत छुपाइए ! मैंने यह स्वयंवर का नाटक केवल आपको पाने के लिए ही रचा था। दमयंती को 'दमयंती' राजा नल के सिवाय कोई नहीं कह सकता। देखा, मैंने आपको पा ही लिया।"

नल ने सिर झुका कर कहा, "हां दमयंती, मैं ही अभागा और पापी तुम्हारा पति हूं।"

"नहीं महाराज, ऐसा मत कहिए।" दमयंती ने विकल होकर कहा, "पर आपकी यह दुर्दशा कैसे हो गयी ? सूर्य की तरह तेजस्वी राजा नल अंधेरे के समान काले कैसे हो गये ?"

"दमयंती ! इसकी तुम जरा भी चिंता मत करो। मैं कुछ ही देर में बिल्कुल ठीक हो जाऊंगा।"

तब दमयंती भागकर अपने मां-बाप के पास गयी। उसने सारे समाचार सुनाये। थोड़ी देर में राजा भीम उसकी रानी भाग कर राजा नल के पास आये।

तब तक राजा नल ने कार्कोटक के दिये वस्त्र पहन लिये थे। उससे वह पहले की भांति दिव्य बन गया था।

ऋतुपर्ण को जैसे ही राजा नल के बारे में पता लगा, वह भाग कर आया। उसने राजा नल को गले लगा कर क्षमा मांगी, "राजन ! मुझे इसका क्या पता था। अनजाने में जो गलती हुई है, उसके लिए क्षमा चाहता हूं।"

नल ने नम्र स्वर में कहा, "महाराज, मनुष्य समय के आदेश पर चलता है। आपको क्या दोष दूं, मैंने तो अपनी पत्नी के साथ विश्वासघात किया है। समय बड़ा बलवान होता है।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

इस तरह चर्चा करते हुए सांझ हो गयी। विदर्भ के मंदिरों और द्विज घरों में शंक बजने लगे। दमयंती को उसकी तीनों सहेलियां घेरे हुए थीं। केशिनी ने वन्या से कहा, "आज तो रानी जी को केसर स्नान कराया जाय।"

"नहीं केशिनी !" वन्या बोली, "मैं चाहती हूं केवड़ा के इत्र..."

सुहासिनी ने हंस कर कहा, "आज तो रानी जी के अंग-अंग से ऐसी ही सुगन्ध आ रही है। भगवान बड़ा दयालु है।"

तभी राजा नल के आने का समाचार मिला। तीनों महल से निकल गयीं।

राजा नल को देखते ही दमयंती उससे लिपट गयी। उसके नयनों में से अश्रु टपकने लगे। राजा नल धैर्य देता रहा।

दमयंती ने कहा, "अब हम क्या करेंगे।"

राजा नल की भृकुटियों में बल पड़ने लगे। कठोर स्वर में बोले, "मैं देवताओं की शक्ति को लेकर पुष्कर का नाश कर दूंगा।"

दमयंती ने नल को शांत किया, "नहीं महाराज, आपको मैं ऐसा नहीं करने दूंगी।"

"क्यों नहीं करने दोगी। जिस भाई ने राक्षस की भांति कठोर होकर अपनी भाभी व भाई को निकाल दिया, वह दया के योग्य नहीं।"

दमयंती ने दृढ़ स्वर में कहा, "महाराज ! मैं आपकी पत्नी और उसकी भाभी हूं, भाभी मां के समान होती है। मां अपने बुरे बच्चे को भी गले लगाती है।"

नल झुंझलाकर बोला, "लेकिन...।"

"बस महाराज, आप कुछ भी कहिए, मैं पुष्कर का अहित

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

नहीं होने दूंगी।···महाराज ! इसी स्थल पर आकर नारी महान बनती है। आपको पुष्कर को क्षमा करना ही पड़ेगा।

नल ने दमयंती की प्रशंसा की। उसे ममता की देवी कहा।

तभी इन्द्रसेन और इन्द्रसेना को केशिनी ले आयी। राजा नल अपने दोनों बच्चों को एक साथ गोद में उठाकर प्यार करने लगा।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तेरह

पुष्कर अवगुणों का घर और अत्यन्त ही निष्क्रिय हो गया था। द्वापर और कलि दोनों उसे कुपथ पर डाल रहे थे। इसी बीच एक दूत ने आकर कहा, "महाराज नल पधार रहे हैं।"

कलि ने द्वापर को एकांत में लेकर कहा, "भाई हमारा समय समाप्त हो गया है, अब हमें यहां से खिसक जाना चाहिए वर्ना बहुत दुर्गति होगी।"

द्वापर और कलि चुपचाप चले गये। उनके जाने का पता भी पुष्कर को नहीं लगा, अब पुष्कर ने थोड़ी वास्तविकता को समझा। पर सच्चाई को समझ कर भी उसकी आंखें नहीं खुलीं।

पुष्कर स्वयं नगर के द्वार पर आकर खड़ा हो गया। उसने राजा नल का रथ रोक दिया। उसके सैनिकों ने राजा नल को सपरिवार घेर लिया।

राजा नल ने पूछा, "क्या बात है, मुझे अपने नगर में क्यों नहीं घुसने दिया जा रहा है?"

पुष्कर ने उपेक्षा से कहा, "कौन सा नगर? यह नगर तो मेरा है।"

"हां पुष्कर, यह नगर तेरा है, फिर मैं एक नागरिक के रूप में रह सकता हूं।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"नहीं।"

"तो फिर आओ, हम एक बार और हार जीत कर लें।" नल ने दमयंती की ओर देख कर बड़े ही संयत स्वर में कहा। वह चाहता तो पांचों देवताओं के वरदान का लाभ उठा कर पुष्कर का सर्वनाश कर सकता था। दमयंती ने संकेत किया कि वे शांत रहें।

पुष्कर जोर से खिलखिला पड़ा। बोला, "आप हार जीत करेंगे ! पर आप दाव पर क्या लगायेंगे।"

राजा नल ने कहा, "दमयंती को।"

पुष्कर का चेहरा फक-सा रह गया।

"अपने दोनों बच्चों को।"

पुष्कर ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह जुआ खेलने को तैयार हो गया।

इस बार पहले ही दाव में पुष्कर हार गया। देखते-देखते पुष्कर अपना सर्वस्व खो चुका। राजा नल ने फिर पूछा, "बोलो क्या चाहते हो ? तुम्हारे साथ में कैसा बर्ताव करूं।"

पुष्कर ने कहा, "कुत्ते जैसा।"

तभी दमयंती ने बीच में आकर कहा, "नहीं महाराज, यह मेरा देवर है। देवर बेटे के समान होता है। मैं इसे कोई भी दंड नहीं भोगने दूंगी।"

पुष्कर ने चीखते हुए कहा, "नहीं भाभी, मुझ जैसे नीच पर आपको जरा भी दया नहीं करनी चाहिए। मैं पापी हूं, मुझे जलती आग में डलवा दीजिए ?"

दमयंती ने पुष्कर को शांत करके कहा, "नहीं पुष्कर भैया, दोष आप दोनों का नहीं है दोष है बुरी संगत का। यह तो कलि और द्वापर का षडयंत्र था, हम सबके भाग्य का दोष था, अधिक पश्चाताप मत करो। महाराज, पुष्कर को क्षमा कर

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दीजिए।"

नल ने पुष्कर को गले लगा लिया।

पुष्कर अबोध बालकों की तरह रोने लगा। इसी समय पांचों देवता और अन्य प्रतिष्ठित लोग भी आ गये।

नल ने घोषणा की, "मैं पुष्कर को क्षमा करता हूं और उसके सारे अधिकार उसे वापस दे रहा हूं।"

सभी ने हर्षध्वनि की।

राजा नल ने कहा, "इस अवसर पर एक बात कहना चाहूंगा कि यदि दमयंती नहीं होती तो आज आप सबको यह शुभ दिन देखने को नहीं मिलता। यह नारी···।"

दमयन्ती ने लज्जा से सिर झुका कर कहा, "देवता आए हुए हैं···उनकी प्रार्थना करो।"

नल ने देवताओं व गुरुओं को प्रणाम किया इस प्रकार निषध में पहले वाली प्रसन्नता और शांति आ गयी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

देवीराज पराजुली

साझा प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu